भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-15, अंक-8 बुधवार, 26 अग.' 92	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अगस्त, 1992	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' आ रहा है.... सर्व गुणातीत स्वरूपों की छत्र-छाया में दिल्ली में 3rd. Feb. के दिन-वह अमृतपर्व मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ-साथ मनायेंगे। हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरूष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी। हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

❑ ✶ गुरु बहुत होते हैं,
परन्तु
सद्गुरु कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।

✶ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह गुरु।

❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह सद्गुरु।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

–प.पू. काकाजी महाराज

शिकागो, 12-5-'-'77

दिव्यमूर्ति प.पू. पप्पाजी !!!

1st Sept.....चिदाकाश के ध्रुवतारक समान जीवों के कल्याण के लिए मनुष्य रूप में परब्रह्मतत्व को सांगोपांग धारण करके पृथ्वी पर अवतरित हुई दिव्य विभूति का प्रागट्य दिन....अर्थात् गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की 76वीं जन्मजयंती का महामंगलकारी दिन.....

ब्र.स्व. गुरुहरि योगीजी महाराज ने जब से प.पू. पप्पाजी के भीतर में बैठकर समग्र तंत्र पर अधिकार कर लिया, तब से पू. पप्पाजी ने धाम,धामी और मुक्तों को परम सत्य स्वरूप मानकर उनकी सेवा में ही स्वयं के अस्तित्वमात्र को विलिन कर दिया..... भक्त का भक्त बनकर गुणातीत समाज की चार पायों वाली–गृहस्थों, संतों, युवकों, बहनों रूपी इमारत का भार अपने कंधों प ले लिया...और तभी से सतत्–आज भी–हर छोटे-बड़े, वृद्ध-युवान संबंध में आए चैतन्यों की प्रगति के लिए छुपा परिश्रम करके–हमारी रीत से, हमारी मान्यता को आगे रखकर, हमारे ढंग से सेवा ग्रहण करके बल देते रहे है...मिट्टी में से मिट्टी की मूर्ति बनाना आसान कार्य है, पत्थर और काँसे की मूर्ति बनाना भी आसान हैं,पर आंतरिक व बाहरी जगत के गटर में फंसे मोहमाया में जकड़े दोषों से भरपूर जीव को अर्थात् अस्थिर पानी से 'ब्रह्म की मूर्ति बनाना'–पवित्र आकार देना !!! इस अशक्य कार्य को गुणातीत स्वरूपों ने शक्य बनाया है। सारा उद्यम करने के पीछे इनका एक ही हेतु है कि किस प्रकार जीवन निर्वासनिक बने और ब्रह्मरूप हो...इनकी दृष्टि में प्रकृति-पुरुष तक सब धूल समान होते हुए भी हमारे साथ हमारे जैसे ही बनकर प्रकृति पुरुष तक का हमारा जगत अद्‌भुत कला से निर्मूल कर देते हैं।

जड़ जैसे को भी स्वयं का बना के प.पू. पप्पाजी ने निभाया है। सानुकूल संजोगों में तो सभी धैर्य रख सकते हैं, परन्तु बिना किसी कसूर अपमान व तिरस्कार हो, दैहिक कष्ट इत्यादि भयंकर कसौटी के प्रसंग खड़े हों तब भगवान के ऊपर से श्रद्धा उठ जाती है। उन्हीं कसौटियों में स्थिर बुद्धि, प्रत्यक्ष स्वरूप का कल्पना से परे का विश्वास रखकर, उसके भरोसे ही नाव छोड़कर आनंद में रहना....किसी को भी दोषी ठहराये बिना, निन्दा किए बिना, सुने बिना–द्वेषियों तथा प्रेमियों को बड़प्पन देना, सम्मान देना–वह किसी भगवान रखे युग पुरुष का ही कार्य हो सकता है न?

प.पू. पप्पाजी यानि–साधुता की पराकाष्ठा ! सरलता, सादगी, नम्रता, दासत्व की मूर्ति। खुद का तनिक भी अस्तित्व नहीं !! परन्तु गुलाब का फूल ढका हुआ हो, तब भी उसकी सुवास छिपी नहीं रहती।

प.पू. पप्पाजी ने संबंध में आये को हजारों अनुभव कराये हैं, परन्तु वे उसका प्रचार स्वयं न तो करते हैं, न ही करवाते हैं। स्वयं की सिद्धि और महत्ता नहीं दिखाते। उनका बड़प्पन तो पूर्ण साधुता में रहा है। उनकी यह महानता कई प्रसंगों में सभी ने अनुभव की है जैसे–

सालों पहले पू. गुरुजी ने एक बार कुछ नादानी में प.पू. पप्पाजी को कहा कि–पप्पाजी ! आप मुझे नहीं जँचते। प.पू. पप्पाजी यह सुनकर एकदम सहजता से बोले.....**भले मैं तुझे नहीं जँचता, पर तू मुझे जँचता है**.....और एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम्हीं कहोगे **'पप्पाजी आप मुझे जँचते हो'**। और आज हम देखते हैं कि पू. गुरुजी को प.पू. पप्पाजी के प्रति अतिशय पूज्यभाव है–प.पू. काकाजी के प्रति जैसी भावना व प्रीति थी, ऐसी ही है।

हम विचारें कि यदि हमें किसी ने कहा हो कि

तुम मुझे जँचते नहीं–तो हम उसके साथ कैसा वर्ताव करेंगे.....उस व्यक्ति के प्रति हमारे मन में फर्क पड़ ही जायेगा, पर प.पू. पप्पाजी.....! दुनिया में अभी कोई मापदण्ड ऐसा नहीं बना जो स्वरूपों की करुणा को नाप पाये.....

दूसरा ऐसा ही प्रसंग निहारें–

अभी-अभी अप्रैल 1992 में दिल्ली से योगी शताब्दी महोत्सव मनाने करीब 200 से अधिक हरिभक्त गुजरात गये थे..शताब्दी महोत्सव में दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेकर 12th अप्रैल'92 को दोपहर 2 बजे की ट्रेन में बड़ौदा से वापिस दिल्ली आने के लिए निकल रहे थे.....76 years की उम्र में प.पू. पप्पाजी भयंकर गर्मी में जब दोपहर को डेढ़ बजे विद्यानगर से वडोदरा स्टेशन पर संत-मंडल व हरिभक्तों को छोड़ने अचानक आ पहुँचे और वह भी नाश्ता देने....! तो सभी के आश्चर्य का पार नहीं रहा....सब सन्न से रह गये...वाणी तो जैसे मूक हो गई और हरेक का भीतर रो पड़ा, आँखों में आँसू आ गये कि अहो हो ! इस उम्र में भी इतनी कड़ी गर्मी में प.पू. पप्पाजी को संबंध वाले भक्तों का कैसा माहात्म्य ! कैसा सेवकभाव !

तो, ढोल-नगारे बजाकर इतना ही कहना है, समझना है कि ऐसी विभूतियाँ कहाँ से मिलेगी? इसलिए **'अर्थम् साधयामि वा देह पातयामि'** यूं गुरुचरणों में वर्तकर कुछ भी खटपट किए बिना, प्रत्यक्ष स्वरूपों का सेवन करके सारधार पार उतारने सच्ची मोक्ष की बुद्धि–निर्दोषबुद्धि दृढ़ कर लें। यह भजन सिद्ध हो–यही अभ्यर्थना !

❖❖❖❖

ब्रह्मप्रवाह

- .....**बुद्धि गुरुचरणों में रखें और दीनता से** पुकार करें तो **गुरुपाद** में से गुरु हृदय में–शिष्य के हृदय में प्रवेश करके–वेदरस के मुताबिक प्रेरणा करता ही है। इस प्रकार दो जनें मिलकर **ब्रह्मशक्ति को ही** कार्य करने दो। **आजमाओ** और **अनुभव करो** व पक्की प्रतीति–**अनुभूति** करो....जय जय जयकार होगा ही।
- **'भजन-स्मृति-ध्यान'** और **प्रार्थना**–राम-बाण इलाज सभी के लिए है, वह स्वरूपलक्षी प.पू. बापा को ही धार कर शुरु करना।

(1974)

- .....अब सब स्वतंत्र वर्तें और महाराज जो करावें वह करें। उसमें से नवीन क्रांतिकारी दिव्य दृष्टि–समग्र भाव वाली और संयुक्त रूप वाली उजागर होगी। तो सब राजी रहना। सब कुछ चार्ट के मुताबिक चलता रहता है। इसलिए हमें **अखंड मूर्ति में ही** रहकर प्रत्येक पल काम करते रहना। साक्षीभाव दृढ़ रखकर जो प्रेरणा होवे, वैसा करते जाना, तो भूल नहीं होगी।
- ....प.पू. बापा का भव्य स्वप्न–स्वप्न तो नहीं कहा जाये–परन्तु **एक दिव्य योजना**–40-50 पू. भगतजी–जागा स्वामी जैसे तैयार हो जायें–ऐसा वातावरण स्वयं की आहुति देकर तैयार करके गये। परन्तु कुछ Platform अभी भी तैयार हुआ नहीं। इस कारण अंतर में दर्द रहता है कि हमने प.पू. बापा की जैसी चाहिए, वैसी शोभा नहीं बढ़ाई !

❑ **सचमुच बड़े पुरुष**–कभी उदास तो होते नहीं और नाराज भी नहीं होते; परन्तु **अंतर से** निश्चिंत होकर **प्रसन्न** नहीं होते, उस जैसा कोई बड़ा महापाप मुक्तों के लिए नहीं है। इसलिए मुक्तों को यह गुणातीत ज्ञान सीखना ही पड़ेगा। वह कब होगा? इकट्ठे मिलकर वह पक्का कराना है। आप मैत्रीभाव ही दृढ़ करते जाना जिससे सरल हो जायेगा–तो लग पड़ना....

❑ .....कहीं भी–कभी भी–किसी भी प्रसंग में संबंध वाले के साथ चुभन हुई या मूड गया या समता खो दी या आनंद चला गया–तब तक महिमा का साक्षात्कार बाकी और स्थिति भी बाकी रही। अब वह पक्का कराना है।

❑ और....एकांतिक संत को–गुणातीत संत को इच्छा-अपेक्षा-आकांक्षा-मांग या आग्रह हो ही नहीं सकता। उसे जागरुकता–अखंड दिव्यता की व सर्वदेशीय दिव्यदृष्टि होती है। 'जाने व देखे'–ऐसी निर्विकल्प दृष्टि और शक्ति–ऐसे कितने ?

–प.पू. काकाजी महाराज

(1975)

❋ ❋ ❋ ❋

'पू. काकाजी—मेरी निगाह से'

गुरुहरि प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव वर्ष शुरु हो चुका है। प.पू. काकाजी गुणातीत समाज की नींव है–सर्वस्व हैं....प.पू. काकाजी के संबंध में आने वाले हरेक व्यक्ति को उनका प्रेम मिला, आशीर्वाद मिले, प्रेरणा मिली और जीवन में परिवर्तन आया....उन्होंने हमसे कोई अपेक्षा रखे बिना अपने निःस्वार्थ प्रेम के सागर में ऐसा डुबोये रखा कि हममें से कोई उनके असली स्वरूप को पहचान ही नहीं पाया। आज भी उनकी चाल, उनकी अद्भुत प्रतिभा, उनकी बातें, उनको अनुभव, उनकी स्मृतियों ने हरेक के दिलो दिमाग पर अपना अधिकार किया हुआ है।

'भगवत्कृपा' के इस अंक से एक नया स्तंभ **'पू. काकाजी–मेरी निगाह से'** देने का मंगल प्रारंभ कर रहे हैं.....आपको भी प.पू. काकाजी कोई विशेषता से स्पर्श कर गये होंगे–

आपके हृदय के ऐसे उद्गार इस स्तंभ के लिए साधु मुकुंदजीवनदास को योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली के एड्रेस पर आप भी अवश्य भेजें ताकि सारे गुणातीत समाज को प.पू. काकाजी का एक अद्भुत दर्शन-परिचय हो पाये....]

❑ ❑ ❑

❑ प.पू. काकाजी यानि–योगीजी महाराज की परछाई।

❑ प.पू. काकाजी का दिल यानि–संबंध वालों में खो जाकर उन्हें प्रभु देना।

❑ प.पू. काकाजी की बुद्धि यानि–प्रत्येक अच्छे-बुरे प्रसंग का आनंद से स्वीकार करना।

❑ प.पू. काकाजी विश्वास यानि–योगीजी महाराज की मर्जी में पिघल जाना।

❑ प.पू. काकाजी का माहात्म्य यानि–सात जड़ कोटि की उपेक्षा करके केवल तूंही, तूंही, तूंही।

❑ ओहो! प.पू. काकाजी ने शूरवीरता और अडिगता से कैसी भी कठोर चट्टानें–कगारे तोड़ दिये। इतना ही नहीं, सूखी-बंजर भूमि को हरियाली बनाकर उसमें फूल खिला दिए।

❑ मैंने तो प.पू. काकाजी को जब से देखा है, तब से उनकी मस्ती खूब भारी। 'बस, मैं किसकी घरवाली हूँ'? एक बार मैं Science (विज्ञान) की किताब पढ़ रही थी। प.पू. काकाजी ने पूछा– क्या पढ़ रही हो? मैंने कहा : 'Science की किताब पढ़ रही हूँ, मुझे डॉक्टर बनना है। तुरंत ही प.पू. काकाजी बोले–'तुम तो इस लोक की डॉक्टर बनोगी। हम तो जन्मोजन्म का रोग टालने वाले डॉक्टर बनेंगे।' इसे कहते हैं–प्राप्ति की खुमारी !

❑ प.पू. काकाजी यानि–एक तरफी निष्काम भक्ति ! जीव की गरज न होते हुए भी प.पू. काकाजी केवल करुणा बरसाते ही रहते। उसकी कक्षा पर उतर कर आत्मीयता कर लेते !

–पू. ज्योति बहन

विद्यानगर

❑ सदा ही निरपेक्षभाव से और केवल गुरु प्रसन्नता पा लेने की चाहना से संबंध में आये हरेक को उसकी मर्जी का देकर, उसके लिए साहस झेल कर भी उसके चैतन्य को जाग्रत करके आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर अग्रसर करने वाले थे–प.पू. काकाजी !

–पू. भरतभाई

ताड़देव

❁ ❁ ❁ ❁

स्वामी की बातें

221. .....कथावार्ता में ही सुख है। दूसरे सब काम करने वाले बहुत है। जो आज्ञा करें, उसमें तैयार हैं, परन्तु करने जैसा तो ध्यान है व उसमें ही सुख है। और यहीं पर अटकते हैं, परन्तु किए बिना तो छुटकारा नहीं है। नींद व स्त्री को बराबर कहा है।

प्र–4,97

222. आत्यंतिक प्रलय यानि–ज्ञान प्रलय तक समझना है। जिसने ज्ञान प्रलय किया हो, उसके साथ जुड़े तब वह हो सकता है।

प्र–4,98

223. मंदिर चाहे सोने के बनवाओ या तपस्या से देह सुखा दें इत्यादि चाहे कितने ही साधन करो, परन्तु मैं जैसा हूँ वैसा जाने तब राजी होता हूँ ऐसा महाराज ने कहा है।

प्र–4,99

224. स्वयं को जीवरूप मानने में तो दोष रहेंगे और अक्षरधाम मानें उसमें दोष ही नहीं रहता। और अक्षर में जाना है ऐसा रहता है; परन्तु स्वयं को अक्षर माने तब जाना कहाँ रहा?

प्र–4,100

225. हमारा जन्म दो बातें सिद्ध करने के लिए हुआ है। एक तो अक्षररूप होना, उसमें देह अंतरायरूप है और दूसरा भगवान में जुड़ जाना, उसमें संग अनेक प्रकार के अंतरायरूप हैं। ये दो कसर टालनी हैं।

प्र–4,101

226. स्वयं के गुणों को अन्य के पास दिखाने का प्रयास करें–वह कनिष्ठ
और जो दिखाये भी नहीं; पर छिपाये भी नहीं–वह मध्यम और
जो छिपाये ही रखे–वह उत्तम पुरुष है।
और बड़े संत हमारे ठहराव और हमारी रुचि के अनुसार प्रतिपादन करते हैं।

प्र–4,102

227. एक तो पति का गर्भ और दूसरा किसी परपुरुष का गर्भ–इसमें जैसा फर्क है वैसा ही भगवान का बल लेने और साधन का बल लेने में फर्क हैं। ऐसा महाराज ने कहा है।

प्र–4,103

228. शास्त्र हैं, वह कार्य है और बड़े पुरुष हैं वह कारण है।

प्र–4,104

229. मानसी पूजा तो अंतःकरण में होती है क्योंकि संकल्प करने पड़ते हैं, इसलिए वह तो सूक्ष्म देह है। और प्रतिलोम में तो संकल्प नहीं होता व स्वयं को निराकार मानना तथा उसमें भगवान तो–जैसे पृथ्वी में जल रहा है, दूध मे घी रहा है और तिल में तेल रहा है व फूल में सुंगध रही है, उसी प्रकार जीव में रहे हुए हैं।

प्र–4,105

230. निरंतर स्वयं को टटोलना चाहिए और पीछे हट के सोचना चाहिए कि यह करना है और मैं क्या करने आया हूँ व क्या हो रहा है?

प्र–4,106

231. एक रुचि वाले–समान रुचि वाले पाँच या दो ही इकट्ठे हों तब भी लाखों-करोड़ों के बराबर हैं और उसके बिना तो चाहे कितने भी इकट्ठे हुए हों तब भी अकेले जैसे ही हैं।

प्र–4,107

232. बड़े संत के समागम में रहे तो ध्यान, भजन में कमी आ जाये और ध्यान, भजन करने लगे तो संग करने में कमी आ जाये। उसमें फिर क्या करना चाहिए? यह प्रश्न है। इस प्रश्न का उत्तर दिया कि संग करना। संग से विषय टलने वाले हैं, पर संग के बिना विषय कैसे टलेंगे?

प्र–4,108

233. ....यदि विषय नहीं भोगते तो उसका चिंतन होता है। सो, यदि बहुत जोर कर जाये तो उसे भोगना। परन्तु नहीं भोगना व छोड़ देना, यही सिद्धान्त है।

प्र–4,109

234. बड़े संत के साथ जीव जोड़ें तो दोष टलते हैं और संत के गुण आते हैं। जैसे कांच को सूर्य के सामने रखा जाये तो उसमें से अग्नि प्रगट होती है।

प्र–4,110

235. हमें महाराज मिले हैं, सो स्वयं को अक्षर रूप मानना परन्तु देहरूप नहीं मानना। और विषय हरा दें यह तो देह की राह है, तब भी अक्षर मानना चाहिए।

प्र–4,111

236. भगवान का निश्चय है, परन्तु यदि कोई मंदिर छीन ले और भगवान सहाय न करें तो कईओं का निश्चय टल जाये। दृढ़ निश्चय वाले का तो भले सब कुछ लूट जाये तब भी संशय नहीं होगा।

प्र–4,112

237. सर्वोपरि ज्ञान के मत से तो यह जगत व जगत का व्यवहार है ही नहीं। और : जगत कई प्रकार से बाधारूप बनता है।

प्र–4,113

238. शहर का सेवन, भंडार, कुठार, रूपये, अधिकार आदि–ये सब जीवन को बिगाड़ने के हेतु हैं।

प्र–4,114

239. बड़े संत का सेवन यदि एक वर्ष भी किया हो, तब भी बड़े संत उसका ख्याल रखते हैं। जैसे आरुणि उपमन्यु कुएँ में गिर गये थे तो उनके गुरु ढूंढते-ढूंढते वहाँ गए।

प्र–4,115

❑ ❑ ❑

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	31.8.92	सोमवार	गणेश चतुर्थी
2.	दि.	1.9.92	मंगलवार	प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज की 76वीं जन्मजयंती
3.	दि.	7.9.92	सोमवार	जलझीलनी एकादशी, निर्जला व्रत
4.	दि.	11.9.92	शुक्रवार	पूर्णिमा
5.	दि.	12.9.92	शनिवार	श्राद्ध प्रारंभ
6.	दि.	15.9.92	मंगलवार	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध
7.	दि.	21.9.92	सोमवार	श्रीजी महाराज, ब्र.स्व. जागास्वामिजी का श्राद्ध
8.	दि.	22.9.92	मंगलवार	ब्र.स्व. योगीजी महाराज का श्राद्ध
9.	दि.	23.9.92	बुधवार	ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज का श्राद्ध, एकादशी व्रत
10.	दि.	24.9.92	गुरुवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, ब्र.स्व.भगतजी महाराज का श्राद्ध

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at **Kamal Printers,** IX/5866, Gandhi Nagar, Delhi-110 031